Downloaded From: http://cbseportal.com

संस्कृत

संस्कृत पाठ्यक्रम (ऐच्छिक)
कक्षा IX-X (माध्यमिक स्तर)

भूमिका

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। इसका साहित्य ऋग्वेद–काल से लेकर आज तक अबाध गति से प्रवाहित है। ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जितने ग्रन्थ इस भाषा में लिखे गए हैं उतने किसी अन्य प्राचीन भाषा में नहीं प्राप्त होते। अधिकांश भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों की बहुलता है। अतः संस्कृत भाषा का ज्ञान अन्य भारतीय भाषाओं के सीखने में सहायक सिद्ध होता है। संस्कृत भाषा और साहित्य का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से बहुत महत्त्व है। संस्कृत साहित्य की मूल चेतना, (विविधता को बनाए रखते हुए) भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की है। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्त्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है उनमें संस्कृत भाषा तथा इसका साहित्य प्रमुख है। संस्कृत साहित्य ने उत्तर–दक्षिण या पूर्व–पश्चिम का भेदभाव मिटाकर प्रत्येक नागरिक को भारतीय होने का स्वाभिमान प्रदान किया है। इस भाषा में भारतीय सभ्यता, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान का प्रचुर साहित्य प्रत्येक विधा में तथा समकालीन साहित्य भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है जिसका अनुशीलन समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

संस्कृत को केवल एक प्राचीन भाषा मानना ही पर्याप्त नहीं है। आधुनिक संस्कृत अन्य भारतीय भाषाओं की तरह भारतीय बहुभाषिकता की एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं के सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार संस्कृत भाषा को सीखने में अन्य भाषाओं का सहयोग भी लिया जा सकता है।

बहुभाषिकता के प्रति आदर एक ऐसा सशक्त दृष्टिकोण है, जिससे भाषा–शिक्षण की पूरी विधि ही बदल सकती है।

इसी दृष्टिकोण से माध्यमिक स्तर पर (कक्षा IX–X) संस्कृत के पठन–पाठन के लिए पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

सामान्य उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत के पठन–पाठन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

- संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर विद्यार्थी समझ सकें एवं मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कर सकें।
- संस्कृत साहित्य के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि उत्पन्न करना।
- संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं (प्राचीन एवं अर्वाचीन) से विद्यार्थियों का परिचय कराना।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित करना।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

fof'k"V mís';

Jo.k

- कक्षा में अध्यापक अथवा सहपाठी द्वारा पढ़े गए पाठ अथवा कहे गए विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना तथा सार ग्रहण करते हुए अपेक्षित क्रिया करना।
- रेडियो तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसारित संस्कृत कार्यक्रमों को ध्यानपूर्वक सुनना तथा समझना।
- सहपाठी तथा अध्यापक के कथनों को सुनकर प्रश्न पूछना।

okpu ¼Hkk"k.k½

- पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकना।
- अपने विचारों को प्रकट करते समय उचित शब्दों पर बलाघात करते हुए बोल सकना।
- प्रश्नवाचक आदि भावों को समाहित करते हुए अपने विचारों को स्पष्टता, तथा विनम्रता के साथ प्रकट कर सकना।

iBu

- संस्कृत के गद्य तथा पद्य खण्डों तथा नाट्यांशों का स्पष्ट तथा शुद्ध पाठ करते हुए सारांश समझ सकना।
- संस्कृत वाक्यों का प्रवाह के साथ पाठ कर सकना।
- पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त छंदों (पद्यों) का लय के अनुसार सस्वर पाठ करना।

y[ku ,oa jpuk

- संस्कृत के पठित पदों तथा वाक्यों को सुनकर उन्हें शुद्ध वर्तनी में लिख सकना।
- संधियुक्त गद्यांशों का अनुलेखन कर सकना।
- पठित कहानी या उसके अंश का सार संस्कृत (पाँच वाक्यों) में लिख सकना।
- किसी परिचित विषय अथवा पठित विषय पर सरल संस्कृत वाक्यों में अपने भाव अभिव्यक्त कर सकना।
- किसी संस्कृत कहानी अथवा निबंध को पढ़कर उसके लिए उचित शीर्षक सुझा सकना।

Lrjkr {kerk,¡

कक्षा 9 तथा 10वीं में संस्कृत पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमताओं का विकास हो सकेगा–

- विद्यार्थी संस्कृत में पूछे गए सरल एवं लघु प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा।
- किसी परिचित वस्तु, स्थान एवं घटना का पाँच छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों में वर्णन कर सकेगा।
- पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे सकेगा।
- सहपाठी तथा अध्यापक के विचारों को सुनकर प्रश्न पूछ सकेगा।
- संस्कृत के गद्य, पद्य एवं नाट्यांश खण्डों का प्रवाह तथा उचित लय एवं गति के साथ पाठ कर सकेगा।
- संस्कृत के गद्य खण्डों तथा पद्य का शुद्ध–शुद्ध पाठ करते हुए सारांश समझ सकेगा।
- पठित कहानी या पाठ का सारांश संस्कृत के पाँच वाक्यों में लिख सकेगा।
- किसी संस्कृत कहानी एवं निबन्ध को पढ़कर उसके लिए उचित शीर्षक सुझा सकेगा।
- किसी पठित अथवा सुने हुए विषयों में विद्यमान गुण–दोषों अथवा मूल्यों के सन्दर्भ में अपना मत रख सकेगा।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

ikBîØe ,oa ikBî lkexzh

कक्षा 9 तथा 10वीं के लिए निम्नलिखित पाठ्यसामग्री होगी :

1.	पाठ्यपुस्तक	50 अंक
2.	व्याकरण एवं रचना	50 अंक

कक्षा 9 तथा 10 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित होगी जिसमें 12–12 पाठ होंगे। 75 प्रतिशत पाठ संकलित तथा 25 प्रतिशत पाठ लिखित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों ही कक्षाओं के लिये द्रुतपाठ के रूप में निर्मित एक अन्य पुस्तक का प्रावधान वांछनीय है। एतदर्थ एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित की जाने वाली *सूक्तिसौरभम्* द्वितीय पुष्पम् को अनुशंसित किया जा सकता है। विद्यार्थियों की सहायता हेतु प्रायोगिक व्याकरण की एक अलग पुस्तक वांछनीय है। एतदर्थ एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित व्याकरण की पुस्तक को अनुशंसित किया जा सकता है।

ikBî&fo"k;

पाठ्यविषय के रूप में आकर्षक कथा, सरल संवाद, नाटकीय दृश्य, लघु वर्णन, सुन्दर, सुबोध एवं शिक्षाप्रद श्लोक, गेय ललित पद्य, प्रकृति वर्णन, विशिष्ट बालक, बालिकाओं एवं महापुरुषों के जीवन–चरित्र आदि को आधार बनाया जा सकता है। विषय–चयन के समय इस बात का ध्यान रखना होगा कि पाठों में विविधता एवं रोचकता बनी रहे। प्रत्येक पाठ्यपुस्तक में लगभग 20 प्रतिशत अन्य भाषाओं का संस्कृत अनुवाद तथा 30 प्रतिशत नवीन मौलिक साहित्य का समावेश किया जाना चाहिए।

d{kk IX ds fy, O;kdj.k

vad

1. वर्ण परिचय तथा उच्चारण–स्थान। 2
2. संधि परिचय तथा उसके भेद–स्वर संधि, दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि आदि। 6
3. शब्दरूप 3
   (क) स्वरान्त–बालक, फल, लता, मुनि, पति, भूपति, नदी, भानु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ आदि।
   (ख) व्यंजनान्त–राजन्, भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, वाच्, गच्छत् (शत्रन्त)।
   (ग) सर्वनाम–सर्व, यत्, तत्, किम्, इदम् (सभी लिंगों में) अस्मद् तथा युष्मद्।
   (घ) संख्यावाची शब्द–एक से पचास तक।
4. धातुरूप – (लट्, लङ्, लृट्, लोट्, विधिलिङ्) 3
   (क) भ्वादिगण– भू, पा, श्रु, गम्, पच्, पठ्, लिख्, स्था, दृश्, अस्, सेव्, लभ्।
   (ख) अदादिगण–अद्, ब्रू
   (ग) स्वादि गण– चि (चुनना), शक्
   (घ) तुदादिगण–तुद्, इष्, मिल्, सिच्
   (ङ) क्रयादिगण– क्री
   (च) चुरादिगण– चुर्, भक्ष्, कथ

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

5. उपसर्ग 2
6. प्रत्यय 5
   (क) स्त्रीप्रत्यय–टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्
   (ख) कृदन्तप्रत्यय– क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, शतृ, शानच्, क्तिन्
   (ग) तद्धित प्रत्यय–मतुप्, इनि, तरप्, तमप्, मयट्
7. कारकों का सामान्य ज्ञान 5
8. समास का सामान्य परिचय–द्वन्द्व, तत्पुरुष द्विगु 4
9. रचना
   (क) हिन्दी अंग्रेजी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 5
   (ख) अपठित अनुच्छेद पर आधारित संस्कृत में प्रश्नोत्तर। 5
   (ग) चित्र पर आधारित संस्कृत में वाक्य रचना। 5
   (घ) प्रार्थना पत्र 5

d{kk 10 d fy, 0;kdj.k jpuk ,o vuqokn

1. संधि 5
   (क) पूर्वरूप, पररूप, एवं प्रकृतिभाव।
   (ख) व्यंजन संधि– श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार।
   (ग) विसर्ग संधि– सत्व, उत्व, रुत्व, लोप।
2. शब्दरूप 3
   (क) स्वरान्त–गो, द्यौ, नौ, अक्षि।
   (ख) व्यंजनान्त–पुंस्, पथिन्, गिर्, अहन्, पयस्।
   (ग) सर्वनाम– अदस्, ईदृश्, कतिपय, उभ, कीदृश्।
   (घ) संख्यावाची शब्द–
   (क) क्रमसंख्यावाची शब्द– प्रथम, द्वितीय आदि।
   (ख) पचास से सौ तक।
3. धातुरूप 3
   (क) भ्वादिगण– दा (यच्छ), अर्च्, व्रज्, तप्, शुच्, हृ, नी, भज्, यज्।
   (ख) अदादिगण–हन्, पा (रक्षणे), दुह्
   (ग) जुहोत्यादिगण– दा (दाने)
   (घ) दिवादिगण– त्रस्, नृत्, नश्
   (ङ) स्वादिगण– सु, आप्
   (च) तुदादिगण–मुंच्, विश्, प्रच्छ्, विद् (लाभे)
   (छ) तनादिगण– कृ, तनु
   (ज) क्रयादिगण–ग्रह्
   (झ) चुरादिगण– गण्, पाल्
4. अव्यय 4
5. प्रत्यय 5

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

(क) कृदन्त प्रत्यय– क्त, क्तवतु, तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्यत्, ण्वुल्, ल्युट्, तृच्, णिनि।
(ख) तद्धित प्रत्यय–अण्, इनि, ठक्, इतच्, त्व, तल्, यत्, थाल्

6. कारकों तथा उपपद विभक्तियाँ 5

7. समास – अव्ययीभाव, कर्मधारय, बहुव्रीहि 5

8. रचना
(क) हिन्दी तथा अंग्रेजी के अवतरणों का संस्कृत में अनुवाद। 5
(ख) अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर। 5
(ग) चित्र पर आधारित संस्कृत में वाक्य रचना/संस्कृत में अनुच्छेद लेखन। 5
(घ) अनौपचारिक पत्र। (लगभग 70 शब्दों में) 5

fVIi.kh

उपरि लिखित के लिए उदाहरण यथासंभव पाठ्यपुस्तक में आए प्रयोगों से लेना उपादेय होगा।

f'k{k.k fof/k ,oa rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को सुगम, सुग्राह्य तथा रोचक बनाने के लिए निर्दिष्ट बिन्दुओं को शिक्षण का आधार बनाया जाना चाहिए। शिक्षण करते हुए संस्कृत अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि उनका शिक्षण छात्रकेन्द्रित एवं क्रियापरक हों।

1. अध्यापकों को कक्षा में यथासंभव संस्कृतमय वातावरण बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। एतदर्थ विद्यार्थियों के साथ दैनिक व्यवहार में आने वाले वाक्यों का संस्कृत में मौखिक अभ्यास करवाएं।
2. विद्यार्थियों से समय–समय पर संस्कृत में प्रश्न किए जायें तथा उन्हें संस्कृत में ही उत्तर देने के लिये प्रोत्साहित किया जाय।
3. अध्यापन प्रभावशाली बनाने तथा विद्यार्थियों की संस्कृत अध्ययन में रूचि बढ़ाने के लिए दृश्य एवं श्रव्य उपकरणों तथा संगणक (कम्प्यूटर) आदि का उपयोग किया जाय।
4. गद्य, पद्य, नाटक तथा कहानी आदि को सिखाने के लिए यथासंभव प्रत्यक्ष विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

d{kk&fØ;kdyki

विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा का प्रायोगिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु वर्ग–शिक्षण के अतिरिक्त निम्नांकित क्रिया–कलाप पर विशेष ध्यान देना उचित होगा–

- अध्यापक कक्षा में संस्कृत पाठों को पढ़कर विद्यार्थियों को सुनाएं तथा यथासंभव उनसे भी एक–एक करके तथा सामूहिक रूप से अनुवाचन कराएं।
- अध्यापक कक्षा में पद्य–पाठों को सस्वर पढ़कर विद्यार्थियों को सुनाएं तथा अनुवाचन कराएं।
- नाट्यांशों को पढ़ाते समय अध्यापक वाचिक अभिनय करें तथा विद्यार्थियों से भी वाचिक अभिनय करते हुए पाठ पढ़वाएं।
- अध्यापक कक्षा में संस्कृत कहानी सुनाएं तथा विद्यार्थियों को भी कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।
- संस्कृत में वार्तालाप करते हुए विद्यार्थियों को संस्कृत में वार्तालाप करने की प्रेरणा प्रदान करें।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

- विद्वानों के ध्वनि मुद्रित (रिकार्डेड) आदर्श पाठों को सुनाकर शुद्ध उच्चारण एवं उचित लय, यति के साथ श्लोक–पाठ का शिक्षण किया जाए। इसके अतिरिक्त सी.डी. रोम (C.D. Rom) का प्रयोग करते हुए अध्यापन को रुचिकर बनाने का प्रयास किया जाय।
- कक्षा में श्लोकपाठ एवं अन्त्याक्षरी कार्यक्रमों को भी कराया जा सकता है।

eY;kdu

पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप 80 प्रतिशत लिखित तथा 20 प्रतिशत मौखिक परीक्षा की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त समय–समय पर इकाई परीक्षा (यूनिट परीक्षा) द्वारा विद्यार्थियों की विषयगत त्रुटियों को संशोधित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

- विद्यालय के विभिन्न समारोहों के अवसर पर श्लोक–पाठ, संवाद तथा अन्य क्रिया–कलापों का मूल्यांकन किया जाए।
- विद्यालय में विभिन्न समारोहों के आयोजनों के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत में वार्तालाप, संवाद तथा नाट्य–प्रयोग करने का अवसर प्रदान कर उनका मूल्यांकन किया जाय।

Downloaded From: http://cbseportal.com